अंगजल

(गजल दौरी)

गजलकार :
सुधीर कुमार सिंह 'प्रोग्रामर'

प्रकाशक :
समय साहित्य सम्मेलन
पुनसिया, बाँका, बिहार– 813109

गजलकार :– सुधीर कुमार सिंह 'प्रोग्रामर'

आवरण आरो कम्पोजिंग :– निखिल चंदन आरो पल्लवी रानी
आई0 सी0 एस0 कम्प्यूटर, सुलतानगंज

प्रकाशन वर्ष :– जून 2016

प्रकाशक :– समय साहित्य सम्मेलन पुनसिया,बाँका,बिहार।

सर्वाधिकार :– कुमारी अनिता सिन्हा

मूल्य :– 54/–

संपर्क :– अंगलोक, पार्वती मिल
बाईपास रोड, सुलतानगंज
भागलपुर– 813 213 (बिहार)
skp11061@radiffmail.com
मो0– 93349 22674

ANGJAL (ANGIKA GAZAL)

By : Sudhir Kumar "Programmer"

Price : Rs. 54/- (Fifty four Only)

समर्पण :–

रीत के मीत !

कुमारी अनिता सिन्हा
सहायक शिक्षिका
बी0ए0(आनर्स), बी0टी0
एम0ए0(अंगिका) कें

जौने हर गम के कम करलकै अरो साहित्य सेविका बनी के हर मोरचा पर तनी कें सम्भाली रहलों छै। एतने नै 'ए जी कराय दा अंगिका सें पीजी' के जिद्द करतें–करतें प्रथम श्रेणी सें एम0ए0पास करीये कें दम मारलकै।

– प्रोग्रामर

अनुक्रम

मनों के बात/ 09

1. सरहप्पा 11

कहै दादा सें इक पोता, कि बाबू याद आबै छै
कहींने नें हमर मैया, अबें सिन्दूर लगाबै छै।

2. सांकृत्यायन 12

साल कॅ सिंगार करै चैत महीना
जाड़ कें कगार करै चैत महीना।

3. समीर/परमानन्द 13

हवा में हवाई हो कबतक उड़ैभो
लगै छै बचलका खजाना बुड़ैभो।

4. सुरो 14

नीन उचटी गेलै मियान होतै कहिया
रोटी पे हमरा तियोन होतै कहिया।

5. चकोर/आरोही 15

फागुन के खुमारी में, तन–मन अजबारी छै
सालों के मचानी पर, चैती केरों पारी छै।

6. तेजनारायण/रानीपुरी 16

यहाँ मौसम के धमकी से भला सागर डरैतै की?
अहो रौदा भरोसे पान के पत्ता फरैतै की?

7. अमरेन्द्र 17

मौत केरों डॉर केकरा
ऊंठलै हिलोर केकरा।

8. प्रलय/प्रीतम 18

बदरा रे!.. अँगना मे आबें तॅ जानौं
हमरो दरद मॅ समाबें तॅ जानौं।

9. सरल/भुवन 19

खा–म–खा आँख तों दिखाबों नय
तीर तरकस पॅ तों टिकाबों नय।

10. हरेन्द्र/मस्ताना 20

भूख छै हिन्दी के आरो, अंगिका के त्रास छै
एकदम दिल के दुमहला, पर इ दोनों खास छै।

11. विजेता / दिलवर 21
मुबारक हो रमजान पावन महीना।
खुषी सें हिमालय कें निकलै पसीना।
12. आमोद / ब्रह्मवादी 22
पत्ता फूल हजार भरल छै तुलसी के गाछी में
जीयै के रसधार फरल छै तुलसी के गाछी मे
13. राही / अश्विनी 23
वर्षा के बाराती में, बादल कहार लागै
झिंगुर के तान तासा, बिजली बहार लागै।
14. अनिरुद्ध विमल 24
जेठो के दुपहरिया में तरबा गरमाबै छै
पानी छै पतालो में कुइयां झरबाबै छै।
15. राजकुमार / दिवाकर 25
चिट्ठी पठाबै डाक सें मजमून के बगैर
जैसैं दही–बड़ा मिलै हो नून के बगैर।
16. सान्त्वना / मृदुला 26
जल्दी लानों सावन मेघा
सम्बदिया मन–भावन मेघा।
17. किंकर / नंदेश 27
बोलों उगलों साँझ कहाँ छै
गाँधी–खूदीराम कहाँ छै।
18. गुल्टी / निराला 28
कलम के पुजारी माँगे मैया तेरे द्वार में
षुभ सामाचार मिलै रोजें अखबार में।
19. प्रेमी / विजय 29
कहिनें सब निमझान हो बाबू
चौबटिया सुनषान छै बाबू।
20. तपन / मुरारी 30
जन्मलै खेत में अर मरै खेत में
काम रौदा–बताशे करै खेत में।

21. अंजनी / लोकेश 31
बात बनाबै जानी–जानी
देह तनाबै जानी–जानी।
22. जगप्रिय / जनप्रिय 32
हाकिम के बोली–चाली में छाली छै
हुनको काजू किसमिस भरलों थाली छै।
23. काव्यतीर्थ / छोटेलाल 33
भूल झलकै कहाँ नदानी में
सब करलका भसैलें पानी में।
24. रंजन / सत्या 34
कभी हांस्सै कभी कानै किसानी चीज ऐसन छै
विना बादल केरों बरसा, सुहानी चीज ऐसन छै।
25. गौतम / कुन्दन 35
हम्में कर्ज उतारै वाला
हुनको दाव सुतारै वाला
26. उमानाथ / प्रदीप 36
गजब–गजब कें खेल खेलाबै चोर–सिपाही
अजमाबै कि के कत्तें बरजोर सिपाही।
27. साथी / बैकुण्ठ 37
सत्तू में सत्तू मिलैभें हो मीता
खैभे कि हमरा खिलैभें हो मीता।
28. मनीष / हरिनंदन 38
निकललै बात रानी–साहिबा केरों पहेली सें
बड़ों तूफान आबै कें खबर अैलै हवेली सें।
29. भावानन्द / मोदी 39
घोंसला जों बनाबै तें औवल लगै
जब चिड़ैया जगाबै तें औवल लगै।
30. शिवनारायण / निकुंज 40
अनटेटलों सन बात बसाहा बोलै छै
सब कें आपनें जात बसाहा बोलै छै।

31. विद्या/मीरा 41
झरिया कें बोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी
बुतरू सें लोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।
32. मीणा/अनिता 42
होतै वहा जे होना होतै
जे जे चाहबै ओना होतै।
33. बहादुर/मधुसूदन 43
साँझ कें देहरी पर जलाबै दिया
आँचरों आढ़ मेँ मुस्कुराबै दिया।
34. प्रभाकर/योगेन्द्र 44
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।
तिरंगा के रंग मेँ रंगाबोँ हो भैया।
35. उलूपी/मीरा 45
भोर होलै जगो, जगाबोँ ते
घोंसला प्रेम के बनाबोँ तेँ।
36. नन्दलाल/बेचारा 46
गीत गाथा रीत गंगा पार के
याद आबै छै कथा मझधार के।
37. अनिल/धीरज 47
रस्ता–पैरा पर नै फेकोँ भाँसोँ–कूसोँ
नै फेकोँ धोखा से भी कोय थूक–खखासोँ।
38. प्रहरी/कालजयी 48
लागै छै वोटोँ के दिन फेरू अैलै
वैसने पुरनका ठो सीन फेरू अैलै।
39. भावुक/छन्दराज 49
धरम–करम कें खिस्सा छोड़ोँ
जे बचलोँ छै, ओकरा जोड़ोँ।
40. इन्द्रदेव/भानू 50
माघ कें ओंस मेँ फूल पेँ
छै वहा जे छेलै पूल पेँ।

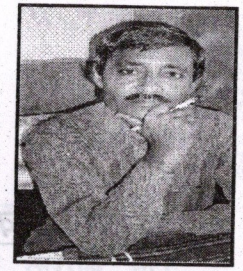

आपनोँ अंगिका भाषा के काव्य–दौरी मेँ **'अंगरथ'** के बाद ***"अंगजल"*** परोसय सेँ पहिनें करोड़ोँ अंग जन सेँ आपनोँ मनोँ के बात करै के मोन करै छै। मने–मन गौरव होय छै कि हम्में पहिलोँ सॉस अंग धरती पर लेलियै, पहिलोँ दर्शन अंगजनपद के करलियै, पहिलोँ स्वाद अंग–मांटी के लेलियै। दादी, माय, बाबू आरो आपने आरनी सेँ केतारी के रोस नाँकी सिसोही कें अंगिका के स्वाद चाखलियै। पहिलोँ स्नेह–सत्कार, मान–सम्मान, अंगजनपद से पैलियै। आबेँ तेँ हिन्दी हमरोँ भूख आरो अंगिका, त्रास बनी गेलै। यै लेली अंगिका गजल दौरी में हम्में जिनका पढ़ी के आरो जिनका साथें रही के अंगिका सिखी रहलो छीयै हुनको नाम सेँ समर्पित छै एक–एक टुकड़ा। ***'अंगजल'*** के माध्यम सेँ कन्खी भर कर्जा चुकाबै के प्रयास करने छीयै।

एकरा मेँ आपनोँ कृति कें लोक–धुन के चासनी मेँ डुबाय के, चापठो पारी के गाबै गुनगुनाबै लायक गजल परसै के प्रयास करने छीयै। आपनोँ जानते एक–एक गजल अंग मनीषी के नाम अर्पित करने छीयै। स्वीकार करियै, आरो सुवाद बताबै के कृपा करियै। संवेदनशील मनीषी–गण, अच्छा–बेजाय सुझाव जरूर दीयै।

असरा मेँ ! – सुधीर

जय–हिन्द! जय–हिन्दी ! जय–अंग ! जय–अंगिका।

खांटी अंगिका रों गजल संग्रह "अंगजल"

भाषा के दृष्टि सें गजल के साथें तीन विशेषण जुड़ै छै– उर्दू गजल, हिन्दुस्तानी गजल आरो हिन्दी गजल मतुर सुधीर कुमार सिंह 'प्रोग्रामर' के 'अंगजल' पढ़ला के बाद ई लागलै कि गजल आबें आपनों चौथों विशेषण 'अंगिका गजल' के स्वरूप में पूरे ताकत आरो सामर्थ्य के साथें उभरी रहलों छै। 'प्रोग्रामर' के गजल खांटी अंगिका में खांटी अंगिका भाषा के शब्दों सें भरलों–पुरलों छै। हिनका गजलों में सौसे अंगजनपद के प्रकृति आपनों सभ्भे टा भाव–भंगिमा के साथें उपस्थित छै। आपनों अंगजनपद के संस्कार, यै मांटी के आशा–निराशा, दुख–सुख, युग रों समस्या, सामाजिक विसंगति, विडम्बना रों कवि नें बहुते बेवाक आरों बारीक चित्रण करनें छै। टूटी रहलों सामाजिक मूल्य कें हिनी अपना गजलों में बहुते तीक्खों आरो तल्ख भाषा में अभिव्यक्त करनें छै। लागै छै गजलकार नें आयकों समय, युग कें बहुते नगीचों सें देखनें, परखनें आरो भोगनें छै। यहें कारण छै कि सुधीर 'प्रोग्रामर' रों गजल जमीन आरो जनता सें सीधे जुड़ी गेलों छै। इनका गजलों में जौं आगिन नांकी तपी रहलों चट्टानों के ताप छै तें प्रेमों के शीतल, सरस मधु बरसात भी छै जें इनका गजलों कें गुलाब के खुशबू सें भरी दै छै, कभी–कभी तें मृगनाभि में बसै वाला कस्तुरी गंध सें पाठक कें आत्मविभोर करी दै छै। 'प्रोग्रामर' जी यै सब गजलों कें गैतों छै बहुते बढ़ियां सें। भगवानें इनका कंठ में मिठास भी मुन्हां फाड़ी कें देनें छै।

ठेठ अंगिका रों ठाठ सें भरलों सुधीर कुमार 'प्रोग्रामर' के ई गजल दौरी 'अंगजल' सें अंगिका साहित्य रों भंडार समृद्ध होलों छै, आरो इनका अंगिका के शीर्षस्थ गजलकार के रूपों में प्रतिष्ठित करि देनें छै, ई बात निःसंकोच कहलों जावें पारै छै।

– अनिरुद्ध प्रसाद विमल

संपादक : समय/अंगधात्री, समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका।

1. सरहप्पा

कहै दादा सें इक पोता, कि बाबू याद आबै छै
कहींने नें हमर मैया, अबें सिन्दूर लगाबै छै।

जों गहलै छै कभी कौवा, तें ढेला फेंकी कैं मैया
अहो बोलौं न हो दादा, तुरत कहिनें भगाबै छै।

खनाखन हाँथ मैं चूड़ी, बजै छै रोज काकी कें
हमर मैया के हांथों मैं, अहो मठिया पिन्हाबै छै।

पुजै छै तीज, करवाँ–चौथ ई टोला मुहल्ला कें
मगर मैया सें पूछै छी तें कानी कॅ कनाबै छै।

बथानी भैंस नै बकरी, न कोनौं गाय किल्ला मैं
मगर कींनी कैं पाथा–भर दही कहिनें जमाबै छै।

आकाशवाणी भागलपुर आरो दूरदर्शन, पटना से प्रसारित

2. सांकृत्यायन

साल कॅ सिंगार करै चैत महीना
जाड़ कें कगार करै चैत महीना।

फाग केरों दाग लाल–लाल गाल पर
मोन कें बहार करै चैत महीना।

मंजरी मैं आम–टिकोला लदर–बदर
बिसुऑ के हॅकार करै चैत महीना।

नीमों के पात सात रोज चिबाबों
रोग कॅ उलार करै चैत महीना।

राम केरों दूत हनुमान घ्यान में
दसभुज जयकार करै चैत महीना।

धरती के पेटों मॅ पूत पली कें
कोख कें निखार करै चैत महीना।

3. समीर/परमानंद

हवा मैं हवाई हो कबतक उड़ैभो
लगै छै बचलका खजाना बुड़ैभो।

अजादी के सुखबा तें तोहीं हसोतल्हें
कहीया गुलामी सें हमरा छोड़ैभो।

बड़ों घर में दूधों सें कुल्ला करै छै
बुतरूआ ई फुल्ला कें कहिया जुड़ैभो।

तोरा घर में सुख आरो सुख के सुखौतों
जरूरत छै अखनी तें कहिया पुरैभो।

सबासिन छै रूसलों जे असरा हियाबै
बताबों न साहब कि कहिया घुरैभो।

4. सुमन सुरो

नीन उचटी गेलै भियान होतै कहिया
रोटी पे हमरा तियोन होतै कहिया।

खिस्से मॅ हिस्सा हजोम करी गेल्हें
माफ हमरो कर्जा–वियान होतै कहिया।

साढु मॅ सटपट, सहोदर लॅ छटपट
हमरा पॅ तोरो धियान होतै कहिया।

थैली मॅ नीयम अटैची मॅ कानून
समझै के हुनका गियान होतै कहिया।

राईफल के बीचौं मॅ झंडा तिरंगा
आढ़सठ तॅ बीतलै निदान होतै कहिया।

तोरौं घर के बूतरू तॅ बापौं के बाबा
हमरो घर के दादा सियान होतै कहिया।

5. चकोर/आरोही

फागुन के खुमारी में, तन–मन अजबारी छै
सालौं के मचानी पर, चैती केरौं पारी छै।

मेहनत के फसल धरलौं, खेतौं सें खम्हारी पर
गदरैलौं खेसारी के, छीमरी सुकुमारी छै।

पैना की अखेना की, दौनी से ओसौनी की
खटरूस टिकोला संग, सतुआ मनोहारी छै।

गाछौं के फुलंगी पर, कोयल केरो किलकारी
उमतैलौं जे पछिया के, बहसल सिसकारी छै।

अचरा मे लपेटी के, कोठी में समेटी के
पहुना के पसीना से, गद्‌गद चिलकारी छै।

6. तेजनारायण/रानीपुरी

यहाँ मौसम के धमकी से भला सागर डरैतै की?
अहो रौदा भरोसे पान के पत्ता फरैतै की?

इलम से काम करना खूब जानै छै बहिन, बेटी
हवा से पूछी के घरनी भला चुल्हा जरैतै की?

बड़ी मिहनत, दुधारी गाय, गोबर, नाद, गोड़ी में
भला न्यूटन यहाँ आबी जनाबर के चरैतै की?

जिताबै छै हराबै छै यहाँ जनता नियामक के
मगर हमरो पसीना के कभी सूरज हरैतै की?

सुनलियै साठ बरसो से अलोधन गाड़लो घर में
मरै के बेर सौसे गाँव में दंगा करैतै की?

7. अमरेन्द्र

मौत केरौं डॉर केकरा
ऊंठलै हिलोर केकरा।

सब हँसी मजाक में रहै
डबडबैलौं लोर केकरा।

मार सब जहाज लें करै
खेत, बैल, हौंर केकरा।

झोपड़ी में ढूकलै इनोर
पेट मॅ मड़ोर केकरा।

आग खेत में लगाय कें
हाँक जोर–जोर केकरा।

8. प्रलय/प्रीतम

बदरा रे!.. अँगना मे आबें तॅ जानौं
हुनको संदेशा सुनाबे तॅ जानौं।

पिया दूर परदेश गेलै तॅ गेलै
हमरो दरद मॅ समाबें तॅ जानौं।

बिजली जों छिटकै नजर चौंधियाबै
नसीबों के बिजली जलाबें तॅ जानौं।

गरीबों पे ठनका गिराबै छैं कहिनें
गरीबी पे ठनका गिराबें तॅ जानौं।

यहाँ बेंग, झिंगुर तॅ गैबे करै छै
नागिन सॅं सोहर गबाबों तॅ जानौं।

9. सरल/भुवन

खा–म–खा आँख तों दिखाबों नय
तीर तरकस पॅ तों टिकाबों नय।

लोग चाहै रहौं मुहब्बत सॅं
लूर धोखा–धड़ी सिखाबों नय।

ई धरा राम कॅ अली के भी
तीन कॅं तीस तों लिखाबों नय।

भूख ईमान कॅ हिलाबै तॅं
देश के आबरू बिकाबों नय।

देह के खून सब बहै तॅ–बहै
ई तिरंगा कभी झुकाबों नय।

10. हरेन्द्र/मस्ताना

भूख छै हिन्दी के आरो, अंगिका के त्रास छै
एकदम दिल के दुमहला, पर इ दोनों खास छै।

है सदन के 'शिष्ट सब भाषा' कें छै सादर नमन
जै धरा पर द्रोण–विश्वामित्र, तुलसीदास छै।

'गैर भाषा बैर' कहना, नय पचै सुकरात कें
बात में सुरमा–भुपाली काम सर्बोग्रास छै।

कर्ण कें जौनें छललकै, हाय रे मरदानगी
झूठ कें घरबास आरो, सत्य कें बनवास छै।

राधिका यमुना जे गेली, पीठ पीछू सें किशन
डाल पर गंगा नहाबै, फेरू लीला रास छै।

11. विजेता/दिवाकर

मुबारक हो रमजान पावन महीना।
खुशी सें हिमालय कें निकलै पसीना।

अजां, सेहरी आरो रोजा नमाजी
इनायत में खाड़ों इ मक्का मदीना।

इतर से गमागम फ़जा ईद के छै
लगाबों गला आरो सीना सें सीना।

कहीं सेवई छै कहीं वीरजानी
इ मंदिर इ मस्जिद धरम के नगीना।

कि हर–हर महादेव–अल्लाह अकबर
इ हिन्दुस्तां रंग मिलतै कहीना।

12. आमोद/ब्रम्हवादी

पत्ता फूल हजार भरल छै तुलसी के गाछी में
जीयै के रसधार फरल छै तुलसी के गाछी में

आस–पास के तुलसी–चौरा, घर–घर के रखबारी
दीप–शिखा सासों के बरल छै तुलसी के गाछी में

देव धरा पर लानै लेली तुलसी दोल चढ़ाबै छै
तभीये ते सिन्दूर करल छै तुलसी के गाछी में।

रोग–शोक में माथ झुकाबो, मनचाहा फल पाबो
कत्ते रोग–बतास डरल छै तुलसी के गाछी में।

तुलसी आक्सीजन के जननी, सबके मान बराबर
नफरत के अभिमान जरल छै तुलसी के गाछी में।

नै बरसा नै जोत कोड़ के, रोजे–रोज झमेला
अनुभव के संसार धरल छै तुलसी के गाछी में।

13. राही/अश्विनी

वर्षा के बाराती में, बादल कहार लागै
झिंगुर के तान तासा, बिजली बहार लागै।

सूरज के पसीना सें बादल के जुआनी छै
बादल के पसीना से रिमझिम फुहार लागै।

कन–कन हवा तूफानी, ओलती सें चुअै पानी,
केकरों छै मॉन गदगद, केकरों पहार लागै।

गरजी के बराती जे चमकी कें डेराबै छै
गाली में सराती के, बादल चुहार लागै।

स्कूल पे बनै स्कूल, बच्चा के मोन हुल–हुल
साइकिल पे चिड़ैयाँ सन नयका बिहार लागै।

14. अनिरुद्ध विमल

जेठो के दुपहरिया में तरबा गरमाबै छै
पानी छै पतालो में कुइयां खनबाबै छै।

बेटी के लगन लागै, सुतलो सपना जागै
धड़फड़–धड़फड बाबुल, मड़वा छरबाबै छै।

आगिन उगलै चुलहा, मन में नाचै दुलहा
छप्पर के फुलंगी पर, कौवा गहलाबै छै।

पूरबा–पछिया गुमसुम, गुमसुम पीपल गछिया
कोयल गाबी–गाबी हमरा बहलाबै छै।

गल्ला से मिली गल्ला, झुम्मर गाबै छल्ला
हल्दी जे लपेसी के, रगड़ी लहबाबै छै

15. राजकुमार/दिवाकर

चिट्ठी पठाबै डाक सें मजमून के बगैर
जैसैं दही–बड़ा मिलै छै नून के बगैर।

हाकिम बिहाने धूप में बैंठलों उदास छै
चहकी कें टोकैं चिड़ियाँ कानून के बगैर।

बी.पी. बढलका टन्न सें मरलै धनाट जे
जीये वहाँ पड़ोस में कुछ खून के बगैर।

गाली में जानबर कें सब दिन बुरा–भला
लेकिन कहाँ छै आदमी नाखून के बगैर।

खेतों में मचानी पर सुनसान जों रहै
गाबै उदास मोन भी गम, धून के बगैर।

16. सान्त्वना/मृदुला

जल्दी लानों सावन मेघा
सम्बदिया मन–भावन मेघा।

जत्ते सुर्पनखा धरती पर
ओतने राम–खेलावन मेघा।

तरकारी सरकारी दर पर
कैता–झिंगली बावन मेघा।

छपरी पर नय उछलों अखनी
नय सधतै ई दाबन मेघा।

कत्ते कंस, हिरण–कष्यप छै
कत्ते भीतर रावन मेघा।

गंगा यमुना मैली होलै
तोहीं करभों पावन मेघा।

17. किंकर/नंदेश

बोलों उगलों साँझ कहाँ छै
गाँधी–खूदीराम कहाँ छै।

साठ साल के आजादी मे
झलकै सचका काम कहाँ छै।

आसाराम जेल मे पड़लों
लेकिन तोता राम कहाँ छै।

फूल–पान सं सजलों–धजलों
हमरों गंगाधाम कहाँ छै।

पैसा पर पानी तक बिक्कै
लेकिन खून के दाम कहाँ छै।

18. गुल्टी/निराला

कलम के पुजारी माँगे मैया तेरे द्वार में
शुभ सामाचार मिलै रोजें अखबार में।

रीन से उरीन रहै, देश के सपनमां
सुख के फुहार मैया बरसे बिहार में।

खेत खलिहान गेहूँ–धान महकौवा
हरा–भरा गाँव–टोला रहे गुलजार में।

स्कूल पे स्कूल बने, महला दूमहला
किनारा लगीच लागै, छेलै मँझधार में।

मोटे–मोटे छिमरी के दाल गदरौवा
साईकिल पे चिड़िया नाँकी बिटिया कतार में

19. प्रेमी/विजय

कहिनें सब निमझान हो बाबू
चौबटिया सुनसान छै बाबू।

सौसें गाँव में गीदर बोलै
लागै कि स्मशान छै बाबू।

बूतरू सब हूलकी के खौजै
घुसलों सब मुस्कान छै बाबू।

उमकै जे कानून तोड़ी के
कहिनों उ बलवान छै बाबू।

सोन चिड़ैयाँ फेरू बनतै
हमरो इ अनुमान छै बाबू।

20. तपन/मुरारी

जन्मलै खेत में अर मरै खेत में
काम रौदा–बताशें करै खेत में।

खूब कैता, करेली लधै झींगली
जब किसानों के लेहू जरै खेत में।

जों किसानों के खुरपी हँसै जोर से
ते पपीता, कदीमा फरै खेत में।

घास–भूसा सरंग से नै आबै कभी
सब जनाबर मगन से चरै खेत में।

रात झरिया पड़ै कि अन्हरिया रहै
दीप जुगनू के रोजे बरै खेत में।

21. अंजनी/लोकेश

बात बनाबै जानी–जानी
देह तनाबै जानी–जानी।

घाव तनीठो फुसरी नांकी
मतर कनाबै जानी–जानी।

गाँव सजाबै लें मैया के
गीत सुनाबै जानी–जानी।

गाछ लगैलो छै बापों कें
पूत भनाबै जानी–जानी।

लोग किबाड़ी तक नय आबै
कूप खनाबै जानी–जानी।

22. जगप्रिय/जनप्रिय

हाकिम के बोली–चाली में छाली छै
हुनको काजू किसमिस भरलों थाली छै।

दुनिया के ठोरों पर पपड़ी छै लेकिन
हुनको ठोरों पर देखों तें लाली छै।

ननदोसी के साथें चलली नयकी तें
रस्ता–पैरा बाजै कत्ते ताली छै।

मौका देखी के गोबर थपियाबों नी
देखों तें बगलों में गहिड़ो नाली छै।

हुनको बूतरू छेना चोभै गारी कें
हमरों बुतरू कें मुँह में की जाली छै।

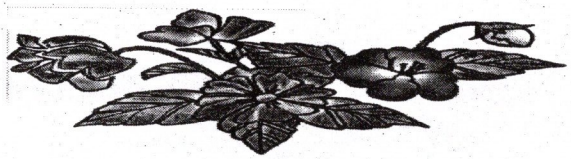

23. काव्यतीर्थ/छोटेलाल

भूल झलकै कहाँ नदानी में
सब करलका भसैलें पानी में।

रोकला सें कहाँ रूकै हाकिम
वक्त चलतें रहै रवानी में।

खूब मिलतै सकून सूनी कें
गुदगुदी जों रहै कहानी में।

आय जे अैलै किताब नयकी टा
बात पहिंने छिले पुरानी में।

सोहदा जे कभी सुधरलै नय
मौत होलै भरल जुवानी में।

7-7-14

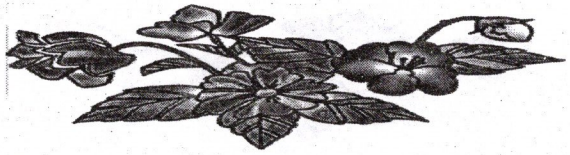

24. रंजन/सत्या

कभी हांस्सै कभी कानै किसानी चीज ऐसन छै
विना बादल केरों बरसा सुहानी चीज ऐसन छै।

उजाड़ै जे चिड़ैया के बसेरा जेठ–भादों में
कुलंगारों कें की कहभों जवानी चीज ऐसन छै।

उखाड़ै गाछ धरती कें उड़ाबै धूल परती कें
हवा के चाल दुनिया में तुफानी चीज ऐसन छै।

हवा कें लाज नय डर, अध–कपारी खूब मातै छै
मरद नाचै इशारा पर जनानी चीज ऐसन छै।

कभी बादल के जोड़ै छै कभी बादल के तोड़ै छै
मुसाफिर कॅ सुनाबै गप–कहानी चीज ऐसन छै।

7-7-14

25. गौतम/कुन्दन

हम्में कर्ज उतारै वाला
हुनको दाव सुतारै वाला

लोक–लाज ताखा पर राखी
गाय दुपचता गारै वाला।

अगल–बगल में मुड़झुलबा सब
बैठी के पुचकारै वाला।

पोथी–पतरा देखी–देखी
जनमै दे ह झमारै वाला।

भूत उतारै के नामों पर
भूत बनै छै झारै वाला।

26. उमानाथ/प्रदीप

गजब–गजब कें खेल खेलाबै चोर–सिपाही
अजमाबै कि के कत्तें बरजोर सिपाही।

बात–बात में धमकी, गारी बेढंगा–सन
आफिसर सें जादे छै मुहजोर सिपाही।

चार डेग दौड़े ते हपसै कुकुर नांकी
मुरगुनियाँ खेलै लागै कमजोर सिपाही।

कोय बैठी के औंघै कोय बीड़ी फूंकै
मतर कहीं जागै छै भोरम–भोर सिपाही।

कोय फदरै पागल नॉकी उल्टा–सीधा
कोय मीट्ठों सन बात सें दै झकझोर सिपाही।

27. साथी/बैकुण्ठ

सत्तू में सत्तू मिलैभें हो मीता
खैभे कि हमरा खिलैभें हो मीता।

हम्में सुदामा तोंय किशन कन्हैया
मारभें कि हमरा जिलैभें हो मीता।

आफत बताबै अघोरी के चुट्टा
लागै छै पानी पिलैभे हो मीता।

नफरत के गाछ यहा हल–हल करै छै
धरती सें जड़ कें हिलैभें हो मीता।

झपटै छै, भुक्कै छै सोना कटाहा
कुत्तें सें ओकरा लिलैभे हो मीता।

28. मनीष/हरिनंदन

निक़लले बात रानी–साहिबा केरों पहेली सें
बड़ों तूफान आबै कें खबर अैलै हवेली सें।

अगरजानी खरहुबा सब मुहल्ला कें इ हल्ला सें
मिंघारी खेल सब घुनसुन सुनाबै छै सहेली सें।

नया बीहा केरों खिस्सा, सुनी आगिन धधाबै छै
हवेली में नया आगिन, पसरलों छै नवेली सें।

कुँवर जगलै कि नय जगलै बगाबत जोर मारै छै
इ आफत कें नया नेंतों पठैलकै कें कसेली सें।

बड़ों घर के बड़ों खिस्सा, उधर राजा के छै हिस्सा
इधर रानी के सपना में भी सजै बेली–चमेली से।

29. भावानन्द/मोदी

घोंसला जों बनाबै तें औवल लगै
जब चिड़ैया जगाबै तें औवल लगै।

सोहदा कें जे दै मसबरा ओकरे
लोटिया जब डुबाबै तें औवल लगै।

रोज चाही मसाला जे अखबार कें
जों बिहैली गोसाबै तें औवल लगै।

सब खबर बे–असर, बर्फ के ढेर पर
जों खबर कें धिपाबै तें औवल लगै।

चोर के दागला सें कहाँ फायदा
जों सिपाही दगाबै तें औवल लगै।

30. शिवनारायण/निकुंज

अनटेटलों सन बात बसाहा बोलै छै
सब कें आपनें जात बसाहा बोलै छै।

जजमानों के पत्ता में लड्डू पेड़ा
पंड़ित जी कें भात बसाहा बोलै छै।

उखड़ी में मुड़ी देलकै जें जानी कें
लाजें बोलै झात बसाहा बोलै छै।

सोना कें मंदिर में पूजा के खातिर
लोभी जुटलै सात बसाहा बोलै छै।

बाघ के साथें बकरी के कुस्ती होतै
देखिहों नौमी रात बसाहा बोलै छै।

31. विद्या/मीरा

झरिया कें बोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी
बुतरू सें लोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।

केना कें टपकतै भला खेती लें जे पानी
बादल सें मोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।

ढक–ढक करै केबाड़ी फोका कभी फूटी
मौसम सें खोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।

भरलै दरार खेत कें, पोखरी में संघरलै
साँपों सें झोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।

डुबकी लगाबै आर तें उ पार में निकलै
पानी कें डोलाबै छै यहाँ बेंग आषाढ़ी।

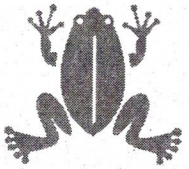

32. मीणा/अनिता

होतै वहा जे होना होतै
जे जे चाहबै ओना होतै।

धरती के उटकी–पैची कॅ
ढेला, गरदा सोना होतै।

अैलो गेलो के हाँथों में
जलखै भरलो दोना होतै।

खुशहाली घर के चौकठ तक
चक–चक कोना–कोना होतै।

अगहन में पोथी बतलाबै
राही जी के गौना होतै।

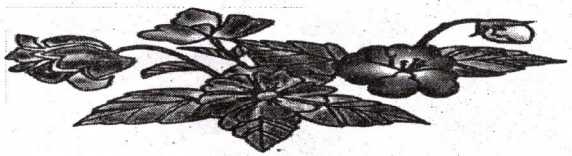

33. बहादुर/मधुसूदन

साँझ कॅ देहरी पर जलाबै दिया
आँचरों आढ़ में मुसकुराबै दिया।

सीसकारी भरै कान में जों हवा
देह झारी जरा झिलमिलाबै दिया।

फूँक मारी बुताबै पिया जोर सें
आँख दाबी ठहाका लगाबै दिया।

पातरों–पातरों ठोर में शौक से
कारखी कें लपेसी रंगाबै दिया।

नीन नखरा करै खूब जों आँख में
तें सुनाबी क लोरी सुताबै दिया।

दिया :– दीया, दीपक (मगर 1, 2) लेली– दिया के प्रयोग छै।

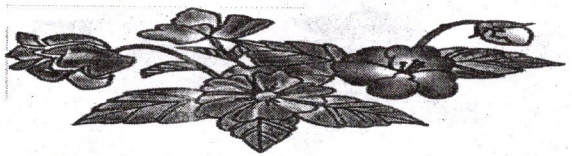

34. प्रभाकर/योगेन्द्र

आजादी के उत्सव मनाबों हो भैया।
तिरंगा के रंग में रंगाबों हो भैया।

दुश्मन के अच्छा नैं झलकै रबैया
इ सुतलों शहर कें जगाबों हो भैया।

जों लहरै तिरंगा तें, उमड़ै छै गंगा
ई गंगा के महिमा सुनाबों हो भैया।

धरती लेली पानी, पानी, लेली बादल
बादल लेली पौधा, लगाबों हो भैया।

हो नेता, भगत सिंह, खुदीराम, जैसन
घर–घर में फौलादी बनाबों हो भैया।

35. उलूपी/मीरा

भोर होलै जगो, जगाबों ते
घोंसला प्रेम के बनाबों तें।

है धरा धर्म के बगीचा में
गीत गोबिन्द के सुनाबों तें।

खूब फरतै हँसी–खुशी सगरें
नेह के गाछ जों लगाबों तें।

देह के खून सब जरै–तें जरै
प्रेम के दीप टा जलाबों तें।

ई तिरंगा सरंग सें ऊचो छै
गाण सरहद के जों सुनाबों तें।

36. नन्दलाल/बेचारा

गीत गाथा रीत गंगा पार के
याद आबै छै कथा मझधार के।

रेत के दरिया बहै तूफान में
सामना मुस्किल छै करना धार के।

बाँन्ह के तोड़ी भसाबै दूर तक
डोंर लागै ऊमतैलों लार के।

चाँन पर करका घटा पहरा करै
डाल घेरा झमझमाझम तार के।

बेंग ताकै आसरा आखार के
नाव चिन्ता नै करै छै भार के।

37. अनिल/धीरज

रस्ता–पैरा पर नै फेकों भाँसों–कूसों
नै फेकों धोखा से भी कोय थूक–खखासों।

बोढ़ी–सोढ़ी घोंर, दीया–बत्ती जे बारै
हौ घर में देवता–पित्तर के छै बासों।

लदर–बदर कोना–कातर कोठी सान्हीं जों
उ घर में परकै छै मोटका–मोटका मूसों।

समझैला पर साफ–सफाई जे नै राखै
माय–दाय देहरी पर जायके ओकरा दूसों।

चिक्कन–चाक्कन रखला से चकचक मनसूआ
मुँह से गिरलों नीमचूस पोछी के चूसों।

38. प्रहरी/कालजयी

लागै छै वोटों के दिन फेरू अैलै
वैसने पुरनका ठो सीन फेरू अैलै।

पाँच साल पहिनें जे खैनें छै किरिया,
ओकरा पर मारै लें पीन फेरू अैलै।

केकरहौ पटाबै ले केकरहौ डेराबै लें
नागिन सपेरा के बीन फेरू अैलै।

थोंथनों से लार–लेर गमकै छै गाँजा
घिन्ना बराबै लें जीन फेरू अैलै।

अखनी तें जेरों–भर गेलै तुरन्तें
माथों भुकाबै लें तीन फेरू अैलै।

39. भावुक/छन्दराज

धरम–करम कें खिस्सा छोड़ों
जे बचलों छै, ओकरा जोड़ों।

जात–पात बज्जात करै छै
आपनों रस्ता, ऐन्हैं मोड़ों।

सबसें बड़का पगड़ी बाला
खूब पढ़ैलकै उल्टा खोड़ों।

भूत झारला सें भागै छै
आबें है सब मिथ्थक तोड़ों।

गाछी तर सोना के कलसी
झूठ बात छै, जल्दी फोड़ों।

40. इन्द्रदेव/भानू

माघ कें ओंस में फूल पें
छै वहा जे छेलै पूल पें।

जाड़ में हाड़ कांपै सुनों
सब चलै मौसमी रूल पें।

थर–थराबै गुहाली में जें
जीनगी फाटलों झूल पें।

खूब लूटै खरूभा मजा
ध्यान रखिहों बड़ों भूल पें।

तड़–फड़ाबै जुवनका मतर
हांथ धरनें रहों मूल पें।

बिहार सरकार द्वारा आयोजित भारतीय कविता समारोह तारामंडल पटना में बाँयें से सुधीर कुमार प्रोग्रामर, आलोक धनवा अशोक वाजपेयी, स्थ जी एवं अन्य साहित्यकार ।

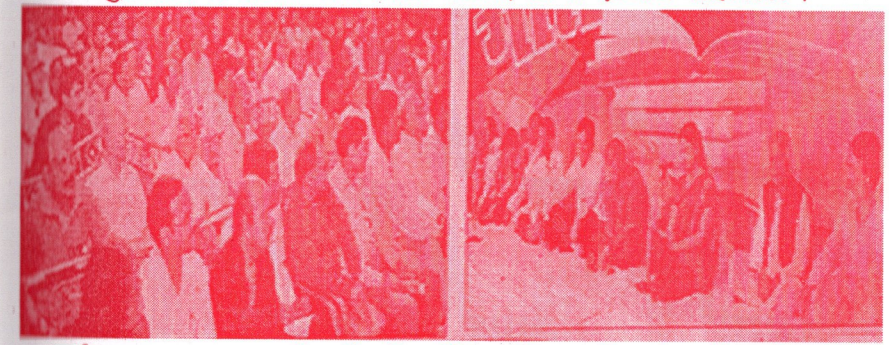

दूरदर्शन पटना द्वारा टाउन हॉल मुंगेर में आयोजित अंगिका कवि सम्मेलन में शामिल दाँयें से विजेता जी, जोगेश्वर जख्मी, सात्वना साह, सुधीर प्रोग्रामर, चंदन जी एवं अन्य कवि बाँयें से दर्शक दीर्घा में अंजनी सुमन, अनिरुद्ध सिन्हा, छन्दराज एवं अन्य।

सुधीर कुमार प्रोग्रामर के गजल संग्रह 'उधार की हँसी' का लोकार्पण करते हुयें डॉ0 तेजनारायण कुशवाहा, ब्रह्मदेव सत्यम, साथी सुरेश, भावानन्द, दिनेश तपन एवं अन्य।